लौहित्य साहित्य सेतु: सहयोगी विद्वानों द्वारा पुनरीक्षित अर्धवार्षिक द्विभाषिक ई-पत्रिका
वर्ष: 2 संख्या: 2 ; जनवरी-जून, 2021

बुंदेलखंडी लोक-पर्व महाबुलिया

✍ डॉ॰ नम्रता द्विवेदी

भारत त्योहारों का देश है। यहाँ वर्ष के प्रत्येक दिन कोई-न-कोई त्योहार मनाया जाता है, चाहे वह किसी भी धर्म या समुदाय का ही क्यों न हो। प्रत्येक त्योहार धर्म एवं समुदाय के साथ-साथ क्षेत्र-विशेष में भी मनाए जाते हैं, जो लोक-पर्व कहलाते हैं। विभिन्न क्षेत्रों में लोक-पर्व अलग-अलग प्रकार से मनाए जाते हैं जिनका अपना एक अलग महत्व होता है। विशेष बात प्रत्येक लोक-पर्व की यह होती है कि इनको मनाने के पीछे कोई एक विशेष घटना नहीं होती, बल्कि एक पर्व को मनाने के पीछे कई किंवदंतियाँ प्रचलित होती हैं। लेकिन हम भारतीय पूरी तन्मयता और आस्था से लोक-पर्वों को मनाते हैं और ये लोक-पर्व कुछ न कुछ बयान जरूर करते हैं। भारत के बुंदेलखंड के कुछ क्षेत्रों जैसे-बाँदा, चित्रकूट, महोबा में भी इसी प्रकार का एक लोक-पर्व मनाया जाता है - महाबुलिया। महाबुलिया श्राद्धपक्ष में कुँवारी लड़कियों द्वारा पंद्रह दिन के लिए मनाया जाता है। इसे लड़कियाँ शाम के समय खेलती हैं। बाहर दरवाजे के पास चबूतरे में गोबर से चौकोर लीपकर और उसमें रंगोली बनाकर बबूल की काँटोंवाली शाखा गड्ढे में लगा दी जाती है। इस शाखा को लड़कियाँ सिंदूर से पूजा करके विभिन्न प्रकार के फूलों से सजाती हैं। फूल शाखा की प्रत्येक डाल में पिरोये जाते हैं। इसके उपरांत लड़कियाँ इसमें प्रसाद चढ़ाकर इसकी परिक्रमा लगाती हैं और परिक्रमा करते समय गीत गाती हैं-

लइयो लइयो रतनगढ़ फूल
सजइयो मेरी महाबुलिया
लइयो गेंदा हजारी के फूल
लइयो चम्पा चमेली के फूल
लइयो घीया तुरइया के फूल
सजइयो मेरी महाबुलिया।

महाबुलिया एक ऐसा लोक-पर्व है जिसमें स्त्री-जीवन की बातें मुखरित होती हैं। महाबुलिया एक लड़की का प्रतीक है। यह पर्व दर्शाता है कि किस प्रकार एक लड़की स्वतंत्र रहकर अपने माता-पिता के घर में पलती-बढ़ती है और अचानक एक दिन उसका विवाह हो जाता है और ससुराल वाले उसे लेने आ जाते हैं। महाबुलिया का ससुराल जाना निश्चित हो जाता है और तब लड़कियाँ यह गीत गाती हैं-

जहाँ राजा आजुल के बाग
तहाँ मोरी महाबुलिया
रानी आज देखन गयी बाग
सजाओ मोरी महाबुलिया
रानी गौरा देखन गयी बाग

सजाई ल्याई महाबुलिया ।

महाबुलिया पूरी तरह फूलों से सजकर तैयार हो जाती है। महाबुलिया को सजाने के उपरांत पुनः सिंदूर, चावल या प्रसाद से उसकी पूजा की जाती है । इसके उपरांत पूजा करते समय एक गीत गाया जाता है जिसमें उस स्थिति का वर्णन है, जब कोई लड़की अपने ससुराल जाती है तो उसे किन कष्टों का सामना करना पड़ता है-

चीकनी महाबुलिया के चीकने पताऔ
बरा तरै लागी अथैया
कै बारी भौजी बरातरे लागी अथैया
मीठी कचरिया के मीठे जो बीजा
मीठे ससुर जी के बोल
करई कचरिया के करए जो बीजा
करए सास जू के बोल
कै बारी बैया करए सास जी के बोल

पूर्वोक्त पंक्तियों का आशय यह है कि ससुर जी के बोल मीठी कचरिया के मीठे बीजों की तरह मीठे हैं, लेकिन सासूजी के बोल कड़वी कचरिया के कड़वे बीज की तरह हैं। एक ही पेड़ में मीठी और कड़वी, दोनों ही कचरियाँ होती हैं । इसी तरह अपने आसपास सभी तरह के लोग भी मिलते हैं। इतना ही नहीं, ससुराल में कार्य करने में भी अनेक बातें सुननी पड़ती हैं -

नानो पीसों उड़ उड़ जाये
मोटो पीसों कोऊ न खाय
नई तिली के तेल, तिलनियां लो लो लो
नये हंडा की भात बननिया लो लो

मायके का जीवन खेलकूद में बीतता है, लेकिन ससुराल में लड़की को गृहस्थी-संबंधी कई कार्य करने पड़ते हैं। महाबुलिया लड्डू बनाती है, लेकिन ससुराल में उन लड्डुओं को कोई पसंद नहीं करता, इस पर महाबुलिया दुःखी हो जाती है एवं लड़कियाँ पूजा के समय एक गीत द्वारा महाबुलिया के माध्यम से स्त्री के दुःख को उजागर करती हैं-

हाँ हाँ सहेली री, वा जीरे के लड्डू बनायी
हाँ हाँ सहेली रे, वे लडुआ मैंने ससुर चिखाये
हाँ हाँ सहेली री, ससुरा निगोड़े ने चीखबू न जाने
हाँ हाँ सहेली री वे लडुआ मैंने देवर चिखाये
हाँ हाँ सहेली री देवरा चीखबू न जाने।

अर्थात् उसने लड्डू बनाये, पर किसी ने न खाये। महाबुलिया अपने ससुराल में दुःखी रहती है। एक दिन एक बटोही वहाँ से गुजरता है तो महाबुलिया अपने भाई सुअटा के नाम एक पत्र लिखकर बटोही के हाथों भिजवाती है। वह लिखती है -

आगरे की गैल में एक बीरन जात हते
ठाड़े रहियो राजा वीरन एक संदेशों लय जइयो
जाय जो कहियो मोरे भाई बाप से
सस ननद दुख देति हैं
साँप की रसरियन से मोये पानी भरवाती है
वे पानी मैं कैसे भरूँ हाथ काटे खात है ॥

इस गीत में नयी नवेली ब्याहता के ससुराल जाने के बाद वहाँ की स्थिति का ऐसा वर्णन है, जिसमें ऊपरी तौर पर तमाम अत्याचार दिखाई देते हैं। लेकिन

वास्तविक स्थिति ऐसी नहीं है। ये वस्तुतः रार-मनुहार और ताने-उलाहने हैं जिनमें प्रेम का भाव छिपा हुआ है; ससुराल के साथ लगाव छिपा हुआ है। रंग-बिरंगे फूलों से सजी नयी-नवेली दुल्हन की तरह महाबुलिया को लड़कियाँ विभिन्न प्रकार के भोग लगाती हैं और गाती हैं -

महाबुल दाई-महाबुल दाई दूध भात न खाये
बहुरी के धोखे बिनौरा चबाये।

इसके बाद वे जाकर उसे तालाब या नदी में विसर्जित कर देती हैं। इतना अधिक कष्ट मिलने के बाद भी महाबुलिया में धैर्य, त्याग एवं सहनशीलता विद्यमान है। एक स्त्री कठोर यातनाएँ सहती है लेकिन वह अपना धैर्य, त्याग, सहनशीलता, दया, विनम्रता, संवेदनशीलता उस समय तक नहीं छोड़ती, जब तक कि कष्ट अपनी चरमसीमा तक नहीं पहुँच जाता । प्राचीनकाल से लेकर आज तक नारी का जीवन कैसा रहा है - इसी को दर्शाने के लिये इस पर्व को मनाने की प्रथा चली। इस पर्व में बताया गया है कि किस प्रकार एक लड़की अपना बचपन नैहर में सुखपूर्वक गुजारती है, लेकिन विवाहोपरांत ससुराल में उसका जीवन बिल्कुल बदल जाता है।

यह पर्व कुवाँरी लड़कियों द्वारा खेला जाता है, ताकि लड़कियाँ महाबुलिया के जीवन से कुछ सीख ले सकें। लड़कियों को मालूम हो सके कि जीवन कितने संघर्षों से भरा हुआ होता है। महाबुलिया एक काँटे की डाल में सजाई जाती है। प्रतिदिन काँटे में फूल सजाए जाते हैं और प्रतिदिन तालाब या नदी में फूल विसर्जित कर दिये जाते हैं। स्त्री बार-बार अपनी सहनशीलता से अपने जीवन में फूल-रूपी खुशियाँ लाती है, लेकिन बार-बार इस पुरुष-प्रधान समाज के कारण उसके जीवन में कष्ट ही कष्ट भर जाते हैं। अंत में महाबुलिया को काँटो की शाखा-सहित नदी या तालाब में पंद्रहवें दिन विसर्जित कर दिया जाता है। आज के समय में इस पर्व को आधुनिक दृष्टि एवं अलग तरीके से देखा जाता है। इसमें पूरी तरह विसर्जन करना इस बात का संकेत है कि स्त्री कई बार कोशिश करती है, अपने अस्तित्व को बचाने की लेकिन अंत में वह हार जाती है और स्वयं को समाप्त कर देती है। वस्तुतः लोक-पर्व लोक-जीवन से, लोक-जीवन के विभिन्न संघर्षों और स्थितियों से जुड़े होते हैं । लोक-पर्वों में ये सभी परिलक्षित होते हैं । महाबुलिया का पर्व भी इसी प्रकार बुंदेलखंड के स्त्री-समाज के जटिल और कठिन जीवन का एक पक्ष दिखाता है।

संदर्भ-ग्रंथ :

1. रामस्वरूप श्रीवास्तव सनेही, बुंदेली लोक-साहित्य
2. समाचार पत्र (1) अमर उजाला (कानपुर) (2) दैनिक जागरण (कानपुर)
3. डॉ॰ कामिनी, बुंदेलखंड की पूर्व रियासतों में पत्र-पांडुलिपियों का सर्वेक्षण

संपर्क-सूत्र :
स्वराज कॉलोनी, बाँदा (उ. प्र.)